## 67वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर निदेशालय के निदेशक महोदय का संबोधन

प्रिय,

साथियो, भाईयो, बहनों और प्यारे बच्चो,

आज २६जनवरी का दिन है । आपको ज्ञात है कि आज के दिन सन् १९५० को हमारा देश गणराज्य बना था । देश में संविधान लागू हुआ था और एक लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत देश का शासन चलाने की नींव रखी गई थी । यह एक ऐतिहासिक महत्व का दिन बन गया है । पूरे देश भर में २६ जनवरी का दिन बड़े गौरव एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है । हम निदेशालय के लोग भी अपने इस प्रांगण में हर वर्ष की भांति वर्ष २०१६ की २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाने के लिये एकत्रित हुए हैं ।

इस शुभ अवसर पर मैं इस निदेशालय का निदेशक होने के नाते सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, अस्थायी वर्ग के कर्मियों, सुरक्षा रक्षकों एवं इनके पूरे परिवार के सदस्यों को इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ । मुझे इस बात की खुशी है कि इस समारोह को मनाने के लिए आज आप लोग बड़ी संख्या में यहां पर एकत्रित हुए है, मैं आपका हार्दिक स्वागत भी करता हूँ ।

१५ अगस्त १९४७ को आजादी मिलने के बाद देश का संविधान बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई थी जो कि २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ और भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया और तभी से यह व्यवस्था बनी हुई है । हम बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि भारत दुनियां का सबसे बड़ा गणराज्य देश है । हमारे देश के साथ जो अन्य देश स्वतंत्र हुए थे और उन्होनें अपने शासन की कोई और व्यवस्था अपनायी । उनको कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । भारत को आजाद कराने में और एक गणराज्य के रूप में स्थापित करने में कई महापुरूषों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । कईयों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी । आज के दिन हम उन सभी को सम्मान से याद करते हैं और उनका धन्यवाद करते हैं ।

उनकी बदौलत हमें एक व्यवस्था मिली जिसमें एक खुली हवा में सांस ले सकें । नियम के तहत् एक दायरे में रहते हुए एक सुखी जीवन व्यतीत कर सकें और अपने देश को ऊंचाई के शिखर पर ले जाएं । १९५० में हमारे देश में खाने–पीने की चीजों की बड़ी कमी थी । विदेशों से अनाज मंगवाना पड़ता था । समुद्री जहाज से अन्न विदेशों से आता था और Ship-to- mouth जैसी स्थिति बनी हुई थी । भारत की सरकार ने इस दिशा में कई ठोस कदम उठाए । कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर अधिक जोर दिया जिसकी बदौलत १९६० के दशक मे हमारे देश में हरित क्रांति आयी ।

कृषि अनुसंधान में खरपतवार विषय पर एक सुचारू एवं समग्र रूप से कार्य करने के लिए राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान केन्द्र की स्थापना २२ अप्रैल १९८९ को की गई । जिसे वर्तमान में हम ''खरपतवार अनुसंधान निदेशालय'' के रूप में जानते हैं । हम यह बड़े गर्व से कहते है कि खरपतवार अनुसंधान निदेशालय पूरी दुनिया भर में एक अनोखा संस्थान है जहां पर खरपतवारों के समाधान हेतु उन्नत तकनीकों का विकास और उसके प्रचार–प्रसार हेतु कार्य किया जाता है । पिछले लगभग २७ वर्षों में हमने कुल मिलाकर अच्छा काम किया है और आज हम यह कह सकते हैं कि हमारे पास खरपतवारों की समस्या के समाधान हेतु कारगर तकनीके

उपलब्ध हैं । इस उपलब्धि को हासिल करने में जो भी लोग पिछले २७ वर्षों से इस निदेशालय में अपना योगदान दे रहे हैं, मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ ।

आज के दिन हमें यह आंकलन भी करना होता है कि हमने पिछले एक वर्ष में क्या उपलब्धियां हासिल की हैं । हम अपने इस निदेशालय को और कितना आगे ले गये हैं । अपनी उपलब्धियों की चर्चा करने के साथ–साथ अपनी कुछ आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डालना चाहूँगा । पिछले वर्ष हमारे निदेशालय द्वारा २५वीं एशियन–पेसीफिक वीड साइंस सोसायटी कांफ्रेस का आयोजन किया गया था जो बहुत ही सफल रही और जिससे हमारे निदेशालय की प्रतिष्ठा पूरी दुनियां में बढ़ी । ए.आई.सी.आर.पी., वीड मेनेजमेंट की वार्षिक बैठक भी हैदराबाद में आयोजित की गई वह भी काफी सफल रही । इसके अलावा ''मेरा गांव मेरा गौरव'' एक नये कार्यक्रम की शुरूवात की गई । जबलपुर क्षेत्र के बाहर भी कटनी, मण्डला, नरसिंहपुर और सिवनी जिलों में भी हमने काम करना शुरू किया । विश्व मृदा दिवस ५ दिसम्बर २०१५ को पहली बार हमारे निदेशालय द्वारा मनाया गया और उसमें लगभग २६० किसानों को ''मृदा स्वास्थ्य कार्ड'' वितरित किये गये । उसके पूर्व अप्रैल–मई के महीने में आर.ए.सी एवं आई.आर.सी. मीटिंग का आयोजन किया गया और अपने अनुसंधान की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की गई । अपना २७ वां स्थापना दिवस भी मनाया । एक पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया था जिसकी स्थानीय मीडिया में काफी चर्चा रही । हमारे निदेशालय द्वारा अंर्तर संस्थान (मध्य क्षेत्र) आई.सी.ए.आर. खेलकूद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसकी भी काफी सराहना मेहमान टीमों द्वारा की गई ।

हमारा निदेशालय मुख्य रूप से एक अनुसंधान संस्थान है । खरपतवार संबंधी विषय पर अनुसंधान करना हमारा प्रमुख उद्धेश्य है । अनुसंधान करने के साथ–साथ अपने काम को अन्य लोगों तक पहुंचाना ताकि उन्हें हमारे द्वारा किये जा रहे अनुसंधान का लाभ मिल सके ।

''जय किसान जय विज्ञान'' सप्ताह का आयोजन किया गया और प्रगतिशील किसानों, कृषि अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों की ''अन्तराफलक बैठक'' का भी आयोजन किया गया था । कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी हमारे निदेशालय में आयोजित किया गया – एक मॉडल ट्रेनिंग कोर्स कृषि अधिकारियों के लिये, और दूसरी ट्रेनिंग कृषि वैज्ञानिकों के लिए आयोजित की गई थी । अपने निदेशालय को और सुंदर एवं स्वच्छ बनाने के लिए और कारगर कदम उठाए गए । वर्तमान में हमारा निदेशालय और निदेशालय का अनुसंधान फार्म भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सभी संस्थानों मे एक प्रमुख स्थान रखता है । हमें इस बात का भी गर्व होना चाहिये कि पूरे आई.सी.ए.आर. में शायद हमारा ही निदेशालय एक ऐसा है, जिसका अनुसंधान कार्य पूर्णतया संरक्षित खेती के सिद्धांतों पर आधारित है ।

वर्तमान में बहुत बढ़िया प्रयोग और जो गैर–प्रयोगिक क्षेत्र है वहां भी बड़ी अच्छी फसलें लगी हुई है । मुझे आशा है कि इस बार रिकार्ड बीज का उत्पादन हमारे निदेशालय के प्रक्षेत्र पर होगा । इसके लिये मैं निदेशालय के प्रक्षेत्र से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ । प्रशासनिक और तकनीकी वर्ग के लोगों ने भी काफी अच्छे कार्य किये है, वह भी बधाई के पात्र हैं । कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका कार्य संतोषजनक नहीं रहा, उनको समझाया भी गया । यदि वे नहीं समझे तो उन्हें दण्डित भी किया गया । ऐसा मेरा विश्वास है कि उनको भी सद्बुद्धि आयेगी और आने वाले वर्षों में उनकी भी गणना अच्छे कर्मचारियों के रूप में की जा सकेगी । लगभग ४ वर्ष पूर्व हमने इस निदेशालय में कुछ नई पहलें की थी उनके भी अच्छे परिणाम सामने आये हैं । जो कार्य हुये हैं वह सभी को दिखते हैं । जो नहीं हुये है एवं जो कमियां रह गई है, वह भी खटकती हैं उनके पूरा न होने का दुख भी होता है ।

सभी को मालूम है कि इस निदेशालय में शुरू से ही कुछ न कुछ ऐसा होता रहा है जिससे निदेशालय का नाम प्रभावित हुआ, कई उतार–चढ़ाव भी आते रहे हैं । हमने पिछली गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ने की

चेष्टा की है । सभी वर्ग के लोगों की कठिनाईयों का समाधान ढूढ़ने की कोशिश की गई और कुल मिलाकर एक सौहार्दपूर्ण वातावरण निर्मित हुआ है । अपने वैज्ञानिकों को हर तरह की सुविधायें देने की कोशिश की है । सुविधाओं का विस्तार किया है जैसे – नेट हाउस, पॉली हाउस, जलीय खरपतवारों की सुविधा, ओ.टी.सी., कन्टेमेंट फेसलिटी, कंट्रोल इन्वायरमेंट चेम्बरर्स, फार्म शेड, पॉन्ड डेवलपमेंट, फार्म मेकानाइजेशन, आदि को बढ़ावा दिया है । लेकिन इतना कुछ होने के बावजूद भी हम अभी भी कई संस्थानों से पीछे है । जब मैं ४ साल पहले यहां पर आया था तब मेरी एक ही अभिलाषा थी कि यह संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के श्रेष्ठ संस्थानों में इसकी गिनती की जाये । हम कहां तक सफल हुए यह सभी के लिये आंकलन का विषय है । कुछ विषयों में हमें बहुत कुछ करना बाकी है ।

हमारे वैज्ञानिकों द्वारा जो प्रकाशन किये जाते हैं, उनमें बहुत सुधार की आवश्यकता है । मैं पिछले ४ वर्षो से बार–बार इस बात को दोहराता रहा हूँ लेकिन इसका कुछ लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जो कि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है । मैं यह विश्वास करता हूँ कि उन लोगों की मानसिकता भी बदलेगी, उनको आज नहीं तो कल इस बात का जरूर एहसास होगा कि जो मैं कह रहा था वह उनकी भलाई के लिये ही था । हमारा निदेशालय छोटा है यहां पर स्टाफ की कमी है और खासकर अच्छे वैज्ञानिकों की । वर्तमान मे १४ वैज्ञानिक हैं जबकि हमारे पास ५० वैज्ञानिकों के लिये काम करने की सुविधाये हैं । हम कोशिश कर रहे है कि कुछ नये वैज्ञानिक निदेशालय में आयें और उनको अच्छे से मैन्टर किया जाये जो इस निदेशालय को अनुसंधान के क्षेत्र में आगे ले जायें । हमें आने वाले वर्ष में कुछ ठोस परिणाम चाहिये । जो भी और सुविधायें चाहिये उनको बताइये आपकी हर जरूरत को पूरा किया जायेगा । मैं यहॉ निदेशक के पद, साथ लिए मिलने वाली सुविधाओं को पाने के लिये नहीं आया हूँ, बल्कि इस निदेशालय के लिये कुछ भी करने के उद्धेश्य से यहां आया हूँ । और जब तक मैं यहां पर हूँ इसी भावना से कार्य करता रहूंगा ।

हर वर्ष की भांति इस गणतंत्र दिवस पर भी हम वृक्षारोपण का कार्य करेंगे और अपने निदेशालय की बाहरी बाउन्ड्री की तरफ मुख्य सड़क के साथ–साथ बायपास तक पौधे लगाएगें । अंत में मैं आप सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए अपेक्षा करता हूँ कि आने वाले वर्ष में आप और अच्छा काम करेगें और अपने निदेशालय एवं भारत देश को उन्नति के शिखर पर ले जायेगें ।

जय हिन्द ।